मानस–गुरुवंदना

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्काररूपिणम् ।

यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ।।

बंदउँ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि ।।

महामोह तम पुंज जासु बचन रबि कर निकर ।।

बंदऊँ गुरु पद पदुम परागा । सुरुचि सुबास सरस अनुरागा ।।

अमिअ मूरिमय चूरन चारू । समन सकल भव रुज परिवारू ।।

सुकृति संभु तन बिमल बिभूती । मंजुल मंगल मोद प्रसूती ।।

जन मन मंजु मुकुर मल हरनी । किएँ तिलक गुन गन बस करनी ।।

श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती । सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती ।।

दलन मोह तम सो सप्रकासू । बड़े भाग उर आवइ जासू ।।

उघरहिं बिमल बिलोचन ही के । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ।

सूझहिं राम चरित मनि मानिक । गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ।।

जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान ।

कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ।।

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन । नयन अमिअ दृग दोष विभंजन ।

तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन । बरनउँ राम चरित भव मोचन ।।